Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054, October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रघुवंशम् के आधार पर राजा रघु का शौर्य वर्णन

डॉ. पी.एस. बघेल*

* एसोसिएट प्रोफेसर, पीएम एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – राजा रघु ने अपने प्रभाव से निर्जल प्रदेश को जल बनाते हुए नदियों पर पुल बनायें। जंगलों को काटकर प्रशस्त मार्गों का निर्माण किया। रघु ने दिग्विजय के निमित्त अपनी सेना को पूर्व सागर की ओर ले जाते हुए ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों भगीरथ के प्रयासों से शिवजी की जटाजूट से उत्पन्न गंगा सागर की ओर प्रवाहित हो रही है।

रघु ने सर्वप्रथम कलिंगराज का वीरतापूर्वक सामना किया।

प्रतिजग्राह कालिंगस्तम्भस्त्रैर्गजसाधनः।
पक्षच्छेदोद्यतं शकं शिलावर्षाव प्रर्वत।।

भावार्थ– जैसे पत्थर बरसने वाले पर्वतों ने अस्त्रों से पंख काटने में तत्पर इन्द्र का सामना किया था वैसे ही हाथी साधने वाले कलिंग राज ने मोर्चा लिया।

रघु ने दिग्विजय के निमित्त अपनी सेना को पूर्व सागर की ओर ले जाते हुए इस प्रकार लग रहे थे मानो राजा भगीरथ शिवजी की जटाजूट से निकली हुई गंगाजी को गंगा सागर की ओर ले जाते हो।

ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचिता पान भूमव्यः।
नारिकेलासवं योधाः शात्रवं च पपुर्यथा।।

भावार्थ– पर्वत पत्र मद्यपान के लिए स्थान बनाकर रघु के सैनिकों ने नारियल के मद्य को पान के पत्तों से पिया और शत्रुओं के यश का भी हरण किया।

ततो वेलातटेनैव फलत्पुगमालिना।
अगस्तत्याचरितामात्मना शास्तत्रयौययौ।।

भावार्थ– पूर्व दिशा को जीतकर आशातीत विजयी रघु फल संयुक्त सुपारी के विपिन की कतार वाले समुद्र के किनारे–किनारे अगस्त्मुनिसेवित दक्षिण की ओर चले।।

भयोत्सृष्ट विभूषाणां तेन केरलयोपिताम्।
अलकेषु चमूरेणुश्चूर्ण प्रतिनिधी कृतः।।

भावार्थ– रघु ने भय से अलंकार रहित केरल देश की स्त्रियों के सुन्दर घुंघराले बालों में सेना की धूलि सुगंधित चूर्ण के स्थान में लगा दी।।

भत्ते भरदनोत्कीर्ण व्यक्तविक्रमलक्षणम्।
त्रिकूटमेव तत्रोच्चैर्जयस्तभं चकार।।

भावार्थ– उस रघु ने अपने हाथियों के दाँतों से खुदे हुए पराक्रम के चिह्न वाले त्रिकूट पर्वत को केरल देश में विजस्तम्भ बनाया।

पारसीकांस्ततोजेतुं प्रतस्थे स्थल वर्त्मना।
इन्द्रियाख्यानिव रिपूंस्तत्वज्ञानेन संजमी।।

भावार्थ–उसके बाद जैसे योगी ज्ञान से इन्द्रियों को जीत लेते हैं वैसे ही राजा रघु पारसियों को जीतने के लिए स्थल मार्ग से चले।

यवनीमुखपद्मानां सेहे मधुमदं न सः।
बलातपमिवाब्जा नामकालजलदोदयः।।

भावार्थ– रघु पारसी स्त्रियों के मुख भी मद्यगन्ध को सहन न कर सके, जैसे समय में उठा हुआ बादल कमल संबंधित बालसूर्य के तप को नहीं सहता।

सङ्ग्रामास्तुमुलस्तस्य पश्चास्तैरश्वसाधनै।
शाङ्गकू जितविज्ञेप्रतियोधे रजस्य भूत।।

अश्वसेनावाले पश्चिम देशवासियों के साथ धनुष की टंकारों से ही अपने शत्रु का द्योतक, धूलि के अन्धेरे में रघु का भीषण संग्राम हुआ।

भल्लापवर्जितैस्तेषां शिरोभिः श्यश्रुलैर्महीम्।
तस्तार सरधायातै स क्षौद्र पटलैरिव।।

भावार्थ– रघु ने मधुमक्खियों से व्याप्त मधु के छत्तों के समान भल्ल वाणों से कटे हुए उनके ढाढी वाले शिरों से पृथ्वी को पाट दिया।

अपनीत शिरस्त्राणाः शेषास्तं शरणं ययुः।
प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भी हि महात्मना।।

भावार्थ– शेष बचे हुए वन अपने शिरक टोपों को उतार कर उस रघु की शरण में गये और क्षमा पा गये, क्यों कि बड़े लोगों का क्रोध नम्रता से दूर होता है।

तत्र हूणावरोधानां भर्तृषु व्यक्तबिक्रमम्।
कपोट पाटलादेशि बभूव रघुचेष्तितम्।।

भावार्थ– उत्तर के राजाओं के प्रति पराक्रम दिखाने वाले रघु का पौरूषं हूणों की स्त्रियों के कपोलों में लालिमा का सूचक हुआ।

काम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यभनीश्वरवराः।
गजाला परिक्लिस्टैरक्षोटैः सार्वमानताः।।

भावार्थ– युद्ध में रघु के पराक्रम को न सह सकने वाले काम्बोज राजा हाथियों के रस्सों से छिले हुए अखरोट के पेड़ों के साथ नम्र होंगये।

तेषा सदश्वभूयिष्ठास्तुगा द्रविणराशयः।
उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोसलेश्वरम्।।

भावार्थ–उन राजाओं के बहुत से अच्छे–अच्छे काबुली घोड़े और ऊँची सोने की राशि उपहार में रघु के पास बार–बार आई, किन्तु गर्व नहीं आया।

तत्र जंन्य रघोर्घोरं पर्वतीयर्गणैरभूत्।
नाराचक्षेपनीयाश्वनिष्येषोत्पतितानलम्।।

भावार्थ– उस हिमालय पर रघु का पर्वतीय गणों से नाराच, बाण, भिन्दिपाल और पत्थर के टुकड़ों की रंगड़े उठी हुई अग्निवाला भयंकर युद्ध हुआ।

शरैरुत्सवसंकेतान् स कृत्वा विरतोत्सवान्।

जयोदाहरणं बाह्योर्गापियास किन्नरान्।।

भावार्थ– उस रघुने बाणों से उत्सव संकेत नामक पहाड़ी कबीलों को पराजित कर किन्नरों द्वारा अपनी भुजा की जकथा का गान कराया।।

'परस्परेण विज्ञात स्तेषूपान पाणिषु।
राज्ञा हिमवत: सारोराज्ञ सारो हिमार्द्रिणा।।'

भावार्थ– भभेंट देने के लिए हाथ में लेकर पर्वतीयों के सर्वणादि आने पर रघु ने हिमालय के धन और हिमालय के राजा रघु के बल को जाना।

'चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वर:।
तद्गजालानतां प्राप्तै: सह कालागुरुद्रुमै:।।'

भावार्थ– उस रघु के लौहित्यनद के पार उतर जाने पर प्राग्जेतिष (आसाम) के राजा रघु के हाथियों की सीकरों के बांधने के लिए स्तम्भ भूतकाले अणर के वृक्षों के साथ काँप गये।

न प्रसेहे स रुद्धाकमधारावषै दुर्दिनम्।
रथवर्त्मरजोऽप्स्यकुत्त एव पताकिनाम्।।

भवार्थ– वे आसाम के राजा सूर्य को ढँक देने वाले वर्षा के बिना मेघावृत्तं दिन के समान रघु के रथ की धूलि को भी न सह सके फिर सेना को कैसे सह सकते हैं।

कामरूपेश्वरस्तस्यहेमपीठाधिदेवताम्।
रत्नपुष्पोपहारेण छायामानचं पादयो:।।

भावार्थ– काम रूप के राजा ने संवर्णनिर्मित राजसिंहासन के देवता उस रघु के पैरों की उपहारभभूत रत्नमयी पुष्पों को अर्पित करके पूजा की।

मिट्टी के अर्ध्य पात्र से ही विश्वजित यज्ञ में समस्त सम्पत्ति का व्यय करने वाले रघु की यह उदार वाणी सुन कौत्सऋषि अपनी कार्यसिद्धि में निराश होते हुए बोले– हे राजन्! आप हमारी सब प्रकार से कुशल समझें, आप जैसे राजा के रहने पर प्रजा का अकुशल कैसे हो सकता है? जैसे सूर्य के प्रकाशमान रहते अन्धकार किसी दृष्टि को ढँक सकता है।

पूज्जनों में भक्ति रखना आपकी कुल परम्परा है, अत: आपमें यह गुण अपने पूर्वजों से भी अधिक है। किन्तु इसका मुझे अत्यंत दु:ख है कि मै समय बीतने पर आया।

हे राजन्! यज्ञ में सर्वस्व दे देने के कारण शरीर मात्र से स्थित आप वैसे ही लग रहे हैं जैसे वनवासियों द्वारा फल तोड़ लिये जाने पर ढंठल मात्र शेष नीवार धान्य हो।

आप अद्धितीय चक्रवर्ती होते हुए भी यज्ञ में सर्वस्व दान कर देने से उत्पन्न निर्धनता को प्रकट कर रहे हैं, यह उचित ही हैं, क्योंकि देवताओं द्वारा क्रम से पीये गये चंद्रमा का कलाक्षय वृद्धि की अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय होता है।

हे राजन्! गुरुदक्षिणा के अतिरिक्त दूसरा कोई प्रयोजन न रखने वाला मैं अन्य देवताओं से गुरु दक्षिणा की प्राप्ति का प्रयत्न करूंगा,क्योंकि चातक पक्षी भी जल रहित मेघ से जल की याचना नहीं करता।

रघु के पराक्रम की चर्चा करते हुए राजा रघु की उदारता की भी चर्चा स्पृहणीय है। राजा रघु ने जिन राजाओं को जीत लिा था, उन्हें पुन: वहीं का राजा बना दिया। जिससे रघु का दिग्विजय का रास्ता निष्कंटक बना दिया था।

सुह्य देश के राजा ने बुद्ध किये बिना ही वैतसी वृत्ति का आश्रय कर उनकी अधिनता स्वीकार कर ली थी। बाद में रघु ने बंगाल के राजाओं पर विजय प्राप्त कर गंगा सागर के द्वीपों पर अपना विजय स्तम्भ गाड़ दिया था।

रघु ने हाथियों का पुल बनाकर कपिशा नदी को पार किया। फिर कलिंग राजा को पराजित किया।

अन्त में रघु ने यवनों को पराजित कर पारसी राजाओं को युद्ध में पराजित किया।

हूणों का प्रान्त ही पूर्व में अपराजित था लेकिन रघु ने हूणों को भी पराजित किया।

अन्त में चारों दिशाओं में अपनी विजय यात्रा पूरी कर विश्वजित नामक यज्ञ किया।

राजा रघु को कोई संतान नहीं थी तब गुरु कौत्स ने राजा को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया और तदनुसार रघु को पुत्र प्राप्ति हुई।

समाप्त विधेन मया महर्षि र्विज्ञापितोऽभूत्
गुरुदक्षिणायै।
स मे चिराास्खलितोपचारां तां
भक्तिमेवागणयत्पुरस्तात्।।

भावार्थ– समस्त विद्याओं को पढ़ लेने पर मैंने महर्षि वरतन्तु से जब गुरु दक्षिणा लेने की प्रार्थना की तब उन्होंने बहुत दिनों तक निमपूर्वक मेरे द्वारा की गई गुरु–सेवा को ही श्रेष्ठ दक्षिणा समझा।

तब गुरु क्रोधित हो कर बोले–

बार–बार गुरु दक्षिणा के लिए आग्रह करने पर क्रूद्ध गुरु ने मेरी दरिद्रता पर ध्यान न देते हुए कहा कि 14 विद्याओं के लिए 14 करोड़ द्रव्य लाकर दो।

सोऽ हं सपर्या विधि भाजनेन मत्वा
भवन्तं प्रभु शब्द शेषम्।
अभुत्सहे सम्पत्ति नोपरोद्धुल्पेतर–
त्वाच्छ्रु, तनिष्क्रयास्य।

भावार्थ– पूजा में 'मृण्मय' अर्ध्यपात्र के द्वारा ही आपको सर्वधा निर्धन जानकर गुरु दक्षिणा की अधिकता से अब आपसे कुछ कहने का साहस ही नहीं है। अब तो आप नाम मात्र से सम्राट् है।

स त्वं प्रशस्ते महिते मदीये ऽग्नि।
वसंश्चतुर्थोऽग्नि रिवाग्नगारे
द्वित्राण्हार्न्हसि सोदुमर्हम्
यावधते सधायितु त्वदर्थम्।

भावार्थ– अत: मेरी परम पवित्र यज्ञ शाला में चतुर्थ अग्नि के समान दो या तीन दिन निवास करें, जब तक मैं आपकी कार्यसिद्धि के लिए प्रयत्न करूं।

तथेति तस्यावितर्थ प्रतीत:
प्रत्यग्रहीत्सङ्गरमग्रजन्मा।
गात्तसारां रघुरप्वेक्ष्य
निष्क्रटुमर्थ चकमे कुबेरात्।

भावार्थ– ब्राह्मण कौत्स ने प्रसन्न हो रघु को अव्यर्थं प्रतीज्ञा को स्वीकार किया। इधर महाराज रघु ने भी पृथ्वी को सारहीन समझ कर कुबेर से धन लेने की इच्छा की।

इस प्रकार राजा रघु के दिग्विजय यात्रा समाप्त होने के बाद प्रात: राजा रघु ने प्रभात यात्रा प्रारंभ की त्योंही राक्षसों ने सूचना दी कि कोशगृह में आकाश से सवर्ण वर्षा हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।